चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	15-12-24	2	7-8

दैनिक भास्कर

एक साथ फसलें, सब्जी, फल व मशरूम उत्पादन कर सकेंगे

भास्कर न्यूज | चंडीगढ़

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) हिसार में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। इसमें डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट व डॉ. कविता का योगदान रहा।

विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि मॉडल के तहत किसान एक साथ फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरूम उत्पादन, बायोगैस का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे, सीमांत किसानों के लिए है। इस मॉडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण -पोषण को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों में अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी व उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है व यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के अलावा खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है। विवि की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से 2010 -11 में शोध शुरू हुआ था। 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विवि ने लघु, सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित की।

एचएयू के कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	15-12-24	12	2-5

वैज्ञानिकों ने 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को किया विकसित

हकृवि की समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हिसार। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। मॉडल को विकसित करने में डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट और डॉ. कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने शनिवार को वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। उन्होंने बताया कि यह मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरुम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है। इस माडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है। सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010-11 में शोध कार्य शुरु किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	15-12-24	2	1-4

• फल, संब्जी, मशरूम व पशुपालन के जरिए बढ़ा सकेंगे आय

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल 1.0 को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है।

यह मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है।

मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरूम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। इस माडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण व सुरक्षित भविष्य को ध्यान में रखते हुए आगामी वर्षों

हकृवि कुलपति प्रो. काम्बोज मॉडल विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। साथ ही कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन भी बढ़ेगा। मॉडल को विकसित करने में डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट और डॉ. कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा मौजूद रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि हकृवि के द्वारा विकसित मॉडल से किसानों की आमदनी तो बढ़ेगी ही फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार भी बढ़ेगी।

मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से शोध

सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढ़ने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान आईसीएआर मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010-11 में शोध कार्य शुरू किया गया था।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	15-12-24	2	1-4

उपलब्धि

वैज्ञानिको ने 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को किया विकसित

कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है।

मॉडल को विकसित करने में डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट और डॉ. कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। उन्होंने बताया कि इस मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरूम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है।

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ। स्रोत : संस्थान

इस मॉडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ानी होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है।

सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढ़ने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं।

उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010-11 में शोध कार्य शुरू किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	15-12-24	3	2-4

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

वैज्ञानिको ने 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को किया विकसित

हिसार, 14 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। माडल को विकसित करने में डॉ. एस.के. यादव, डॉ आर.के. नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आर.एस. दादरवाल और डॉ. कविता सहित अन्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरुम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है। इस माडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण -पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है।

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ।

सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढ़ने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010 -11 में शोध कार्य शुरु किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग, कुलसचिव डॉ.पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश कुमार, ओ.एस.डी. डॉ. अतुल ढींगड़ा व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	15-12-24	9	5-6

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को मिली मान्यता

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ। -हप

हिसार, 14 दिसंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई है। इस मॉडल के विकास में डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट और डॉ. कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी और बताया कि इस मॉडल के तहत किसान एक साथ फसलें, सब्जियां, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद, मशरूम उत्पादन और बायोगैस जैसे कार्य कर सकते हैं। यह मॉडल खासकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए उपयुक्त है।

इस मॉडल से कृषि लागत में कमी आएगी, उत्पादन बढ़ेगा और पर्यावरण को भी लाभ मिलेगा। इससे किसानों को वर्षभर आमदनी मिलेगी और खेत की उर्वरक शक्ति भी बढ़ेगी। कृषि जोत सिकुड़ने और लागत बढ़ने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह मॉडल विकसित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	15-12-24	5	2-4

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ।

हिसार, 14 दिसम्बर (विरेन्द्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। माडल को विकसित करने में डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट और डॉ. कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। उन्होंने बताया कि यह मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरुम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है। इस माडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है। सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ एस.के. ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010 -11 में शोध कार्य शुरु किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	15-12-24	4	2-4

समन्वित कृषि प्रणाली माडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

माडल से कृषि लागत में आएगी कमी और बढ़ेगा उत्पादन

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली माडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता पर वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ● पीआरओ

जागरण संवाददाता ● हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली माडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। माडल को विकसित करने में डा. एसके यादव, डा. आरके नैनवाल, डा. पवन कुमार, डा. आरएस दादरवाल, डा. आरडी जाट और डा. कविता का योगदान रहा।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि यह माडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरुम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर माडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है। इस माडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण -पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि माडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह माडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है। सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डा. एसके ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढ़ने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आइसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010 -11 में शोध कार्य शुरु किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली माडल विकसित किया गया है।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग, कुलसचिव डा. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश कुमार, ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक चेतना	14.12.2024	--	--

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

वैज्ञानिको ने 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को किया विकसित

हिसार, चेतना संवाददाता। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। मॉडल को विकसित करने में डॉ एसके यादव, डॉ आरके नैनवाल, डॉ पवन कुमार, डॉ आरएस दादरवाल, डॉ आरडी जाट और डॉ कविता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। उन्होंने बताया कि यह मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरूम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते हैं। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है। इस मॉडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण -पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है। सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ एस.के. ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढ़ने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010 -11 में शोध कार्य शुरू किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग, कुलसचिव डॉ पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश कुमार, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	15.12.2024	--	--

हकृवि के समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता

- वैज्ञानिकों ने 1.0 हैक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को किया विकसित

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 14 दिसंबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। उन्होंने बताया कि यह मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरूम उत्पादन, बायोगैस आदि का

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ।

कार्य कर सकते है। ये 1.0 हेक्टेयर मॉडल विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए है। इस माडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण -पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है। माडल को विकसित करने में डॉ एसके यादव, डॉ आरके नैनवाल, डॉ पवन कुमार, डॉ आरएस दादरवाल, डॉ आरडी जाट और डॉ कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ एस.के. ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढ़ने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010 -11 में शोध कार्य शुरु किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग, कुलसचिव डॉ पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश कुमार, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ-छोर	14.12.2024	--	--

हकृवि के कृषि प्रणाली मॉडल को मिली राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता

वैज्ञानिकों ने 1.0 हैक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को किया विकसित

नभ-छोर न्यूज ›› 14 दिसंबर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना से विकसित 1.0 हैक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई है। माडल को विकसित करने में डॉ. एसके यादव, डॉ. आरके नैनवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. आरएस दादरवाल, डॉ. आरडी जाट और डॉ. कविता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। उन्होंने बताया कि यह मॉडल के अंतर्गत किसान एक साथ अलग-अलग फसलें, सब्जी, फल, पशुपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मशरुम उत्पादन, बायोगैस आदि का कार्य कर सकते है। इस माडल से देश की बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण व सुरक्षित भविष्य को मद्देनजर रखते हुए आगामी वर्षों के लिए अनाज, सब्जी, फल, दाल, दूध, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादों की पैदावार बढ़ाने होगी। इससे किसान खेती के लिए उपलब्ध संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर पाएंगे, कृषि लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। यह कृषि मॉडल पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है और यह मॉडल किसानों को वर्ष भर आमदनी देने के साथ-साथ खेत की उर्वरक शक्ति को भी बढ़ाता है।

सिकुड़ती जा रही है कृषि जोत : डॉ. ठकराल

सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने बताया कि कृषि जोत सिकुड़ती जा रही है और कृषि लागत बढ़ने के कारण किसानों को उचित भाव भी नहीं मिल रहे हैं जिसके कारण दिन-प्रतिदिन किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। उपरोक्त समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालय की सस्य विज्ञान विभाग भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) मोदीपुरम मेरठ के सहयोग से वर्ष 2010-11 में शोध कार्य शुरू किया गया था। उन्होंने बताया कि 10 वर्षों के अनुसंधान के बाद विश्वविद्यालय ने लघु और सीमांत किसानों के लिए 1.0 हेक्टेयर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल विकसित किया गया है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, कुलसचिव डॉ पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।